Gyanshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
Available online at : www.gisrrj.com
OPEN ACCESS
© 2025 GISRRJ | Volume 8 | Issue 1 | ISSN : 2582-0095

भारत–जापान रणनीतिक सहयोग और एक्ट ईस्ट नीतिः पूर्वी एशिया में शक्ति संतुलन की पुनर्रचना का एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

डॉ. शिवपूजन मौर्य
असिस्टेंट प्रोफ़ेसर, रक्षा एवं स्त्रातेजिक अध्ययन विभाग,
इलाहाबाद डिग्री कॉलेज, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, प्रयागराज, उत्तर प्रदेश।

शोधसारांश – वर्तमान वैश्विक व्यवस्था में पूर्वी एशिया एक ऐसा भू–राजनीतिक क्षेत्र बन चुका है, जहाँ वैश्विक शक्तियों की टकराहट, आर्थिक प्रतिस्पर्धा और सैन्य आधिपत्य की होड़ स्पष्ट रूप से दिखाई देती है। यह क्षेत्र न केवल वैश्विक व्यापार के मुख्य समुद्री मार्गों से जुड़ा है, बल्कि यहाँ चीन, जापान, कोरिया, ASEAN और अमेरिका जैसी महाशक्तियों की प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष उपस्थिति इसे सामरिक दृष्टि से अत्यंत संवेदनशील बनाती है। ऐसे में भारत की 'एक्ट ईस्ट नीति' और जापान के साथ उसका गहराता रणनीतिक सहयोग इस शक्ति संतुलन के पुनर्निर्माण की दिशा में एक निर्णायक हस्तक्षेप के रूप में उभर रहा है।

भारत और जापान, दोनों लोकतांत्रिक, तकनीकी और आर्थिक दृष्टि से परिपक्व राष्ट्र हैं, जिनके द्विपक्षीय संबंध बीते कुछ वर्षों में केवल आर्थिक आदान–प्रदान तक सीमित नहीं रहे, बल्कि रक्षा, तकनीकी, साइबर सुरक्षा, और हिंद–प्रशांत रणनीति तक विस्तार पा चुके हैं। भारत की 'एक्ट ईस्ट नीति' का उद्देश्य दक्षिण–पूर्व और पूर्वी एशिया के साथ बहुआयामी जुड़ाव को बढ़ाना है, जिसमें जापान एक प्रमुख और विश्वसनीय भागीदार के रूप में उभरा है। वहीं दूसरी ओर, चीन की आक्रामक विदेश नीति, बेल्ट एंड रोड इनिशिएटिव (BRI), दक्षिण चीन सागर में सैन्य निर्माण, और ताइवान–संवेदनशीलता के चलते क्षेत्र में असंतुलन की स्थिति निर्मित हो रही है। इसी असंतुलन का उत्तर देने के लिए भारत और जापान जैसे राष्ट्रों का सहयोग अत्यंत महत्त्वपूर्ण हो गया है। यह सहयोग न केवल आर्थिक विकास के वाहक हैं, बल्कि मुक्त, स्वतंत्र और समावेशी इंडो–पैसिफिक क्षेत्र की स्थापना में सहायक सिद्ध हो सकते हैं।

इस लेख का उद्देश्य भारत–जापान रणनीतिक सहयोग और भारत की एक्ट ईस्ट नीति के परिप्रेक्ष्य में पूर्वी एशिया में उभरते शक्ति–संतुलन का विश्लेषण करना है। लेख में यह विवेचना की जाएगी कि किस प्रकार भारत–जापान की साझेदारी चीन के बढ़ते वर्चस्व को संतुलित कर सकती है, और कैसे यह द्विपक्षीय सहयोग वैश्विक शक्ति संरचना में एक नई दिशा निर्धारित कर सकता है।

मुख्य शब्द : रणनीतिक सहयोग, एक्ट ईस्ट नीति, पूर्वी एशिया, भारत, जापान।

पूर्वी एशिया की सामरिक महत्ता और शक्ति–संतुलन का बदलता परिदृश्य– पूर्वी एशिया, विश्व की सर्वाधिक रणनीतिक रूप से महत्त्वपूर्ण भू–आर्थिक और भू–राजनीतिक क्षेत्रों में से एक है। यह क्षेत्र न केवल वैश्विक विनिर्माण और प्रौद्योगिकी का केंद्र है, बल्कि विश्व व्यापार और ऊर्जा आपूर्ति श्रृंखलाओं का

Copyright: © the author(s), publisher and licensee Technoscience Academy. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution Non-Commercial License

एक प्रमुख मार्ग भी है। चीन, जापान, दक्षिण कोरिया, ताइवान और ASEAN जैसे देशों की परस्पर प्रतिस्पर्धा और सहयोग ने इस क्षेत्र को वैश्विक शक्ति संतुलन की धुरी बना दिया है। इस क्षेत्र में जो भी शक्ति संतुलन स्थापित होता है, उसका प्रभाव न केवल एशिया पर, बल्कि संपूर्ण विश्व व्यवस्था पर भी पड़ता है।

पिछले दो दशकों में चीन का आर्थिक और सैन्य उदय पूर्वी एशिया के शक्ति संतुलन को स्पष्ट रूप से प्रभावित कर रहा है। विशेषतः दक्षिण चीन सागर में उसके दावों और कृत्रिम द्वीप निर्माण, सैन्य उपस्थिति और नौवहन नियंत्रण की कोशिशों ने क्षेत्रीय तनाव को बढ़ा दिया है। चीन की 'Belt and Road Initiative' (BRI) और 'String of Pearls' जैसी रणनीतियाँ इसे महाद्वीपीय और समुद्री दोनों क्षेत्रों में विस्तारवादी शक्ति के रूप में स्थापित कर रही हैं। इस शक्ति–वृद्धि ने न केवल ASEAN देशों को असमंजस में डाला है, बल्कि अमेरिका, जापान, और भारत जैसे राष्ट्रों को भी चिंतित किया है।

जापान, जो पारंपरिक रूप से अमेरिका के सुरक्षा सहयोगी के रूप में जाना जाता है, अब अधिक स्वतंत्र और सक्रिय भूमिका निभाने की दिशा में अग्रसर है। संविधानिक सीमाओं के बावजूद, जापान अपनी 'Free and Open Indo–Pacific' (FOIP) रणनीति के माध्यम से क्षेत्रीय स्थिरता, नियम आधारित व्यवस्था और मुक्त समुद्री मार्गों के संरक्षण में अग्रणी भूमिका निभा रहा है। जापान अब केवल आर्थिक शक्ति नहीं, बल्कि रणनीतिक भागीदार के रूप में भी उभर रहा है।

इस शक्ति–संतुलन में अमेरिका भी एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता रहा है। उसका दीर्घकालिक सैन्य और कूटनीतिक हस्तक्षेप, विशेषतः जापान और दक्षिण कोरिया में सैनिक तैनाती के माध्यम से, चीन को संतुलित करने का प्रयास रहा है। हालाँकि, हाल के वर्षों में अमेरिका की एशिया नीति में अस्थिरता (विशेषकर ट्रम्प काल में) और घरेलू प्राथमिकताओं के चलते यह क्षेत्रीय देश अब अधिक बहुध्रुवीय सहयोग की ओर झुकाव दिखा रहे हैं।

भारत की भूमिका इस नई स्थिति में निर्णायक बन रही है। 'एक्ट ईस्ट नीति' के माध्यम से भारत अब केवल दक्षिण एशिया तक सीमित नहीं रहा, बल्कि पूर्वी एशिया में भी रणनीतिक सक्रियता दर्शा रहा है। ASEAN के साथ संबंध, QUAD जैसे मंचों पर सक्रिय भागीदारी और जापान के साथ बढ़ते रक्षा एवं तकनीकी सहयोग ने भारत को इस क्षेत्रीय शक्ति–संतुलन के एक स्थायी स्तंभ के रूप में स्थापित किया है।

इस क्षेत्रीय परिदृश्य में क्वाड — भारत, जापान, अमेरिका और ऑस्ट्रेलिया का चतुष्कोणीय मंच — एक ऐसा सामूहिक प्रयास है जो स्वतंत्र, समावेशी और नियम–आधारित हिंद–प्रशांत व्यवस्था को बनाए रखने हेतु प्रयासरत है। यद्यपि यह कोई औपचारिक सैन्य गठबंधन नहीं है, लेकिन यह एक रणनीतिक संकेत अवश्य देता है कि चीन की एकतरफा शक्ति–संरचना को संतुलित करने के लिए समान सोच वाले देश संगठित हो रहे हैं।

इस प्रकार, पूर्वी एशिया का शक्ति संतुलन अब परंपरागत द्विध्रुवीयता (जैसे अमेरिका–चीन) से हटकर बहुध्रुवीय और सहयोगात्मक प्रतिरूप की ओर बढ़ रहा है, जिसमें भारत–जापान की भागीदारी निर्णायक

होती जा रही है। भारत की एक्ट ईस्ट नीति और जापान की FOIP रणनीति — दोनों मिलकर पूर्वी एशिया में एक नए संतुलन, स्थायित्व और सामरिक समझदारी की नींव रखने की दिशा में प्रयासरत हैं।

भारत की एक्ट ईस्ट नीति और पूर्वी एशिया में उसकी सक्रियता— भारत की 'एक्ट ईस्ट नीति' देश की विदेश नीति का एक ऐसा आयाम है जिसने दक्षिण—पूर्व और पूर्वी एशिया के देशों के साथ भारत के संबंधों को केवल आर्थिक ही नहीं, बल्कि रणनीतिक, सांस्कृतिक और सुरक्षा दृष्टि से भी सुदृढ़ किया है। वर्ष 2014 में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में श्लुक ईस्ट नीतिश का रूपांतरण 'एक्ट ईस्ट नीति' में हुआ, जो केवल दृष्टिकोण नहीं बल्कि सक्रिय सहभागिता पर बल देता है। यह नीति भारत की पूर्ववर्ती सीमाओं से परे एक व्यापक एशियाई पहचान और उपस्थिति को स्थापित करने का प्रयास करती है।

ऐतिहासिक पृष्ठभूमि से सक्रियता की ओर— 'लुक ईस्ट नीति' की शुरुआत 1990 के दशक की शुरुआत में प्रधानमंत्री पी. वी. नरसिंह राव के नेतृत्व में हुई थी, जिसका प्रमुख उद्देश्य ASEAN देशों के साथ आर्थिक और कूटनीतिक संबंध स्थापित करना था। परंतु यह नीति मुख्यतः व्यापार तक सीमित थी। 2014 के बाद इसमें रणनीतिक, रक्षा, संपर्क और सुरक्षा जैसे आयाम जोड़े गए, जिससे यह एक व्यापक नीति फ्रेमवर्क बन गई।

एक्ट ईस्ट नीति के प्रमुख स्तंभ

1. **रणनीतिक और सुरक्षा सहयोगः** भारत ने जापान, वियतनाम, सिंगापुर, ऑस्ट्रेलिया जैसे देशों के साथ समुद्री सुरक्षा, सैन्य अभ्यास और रक्षा समझौतों को मजबूत किया है। मालाबार नौसैनिक अभ्यास, जो जापान और अमेरिका के साथ आयोजित होता है, इसका प्रमुख उदाहरण है।
2. **भौतिक और डिजिटल संपर्कः** भारत पूर्वोत्तर राज्यों को दक्षिण—पूर्व एशिया से जोड़ने हेतु IMT ट्राइलेटरल हाइवे (India–Myanmar–Thailand Highway), कलादान मल्टीमॉडल ट्रांजिट प्रोजेक्ट, और डिजिटल ब्रॉडबैंड कनेक्टिविटी जैसे कार्यक्रम चला रहा है।
3. **आर्थिक सहयोग:** भारत ने ASEAN देशों के साथ व्यापार समझौते किए हैं और भारत—जापान, भारत—वियतनाम जैसे द्विपक्षीय आर्थिक मंचों को सक्रिय किया है। पूर्वी एशिया में निवेश, विनिर्माण, ऊर्जा, और प्रौद्योगिकी जैसे क्षेत्रों में भारत की भूमिका बढ़ रही है।
4. **संस्कृति और शिक्षा:** बौद्ध धर्म की साझा विरासत, भारतीय भाषाओं का प्रसार, छात्रवृत्तियाँ, और सांस्कृतिक आदान—प्रदान — ये सब भारत को इस क्षेत्र में एक नरम शक्ति (Soft Power) के रूप में प्रतिष्ठित करते हैं।

पूर्वी एशिया में भारत की विशेष सक्रियताएँ— भारत की एक्ट ईस्ट नीति केवल ASEAN तक सीमित नहीं है, बल्कि इसका विस्तार पूर्वी एशिया तक हो चुका है, विशेषतः जापान, कोरिया, और ऑस्ट्रेलिया जैसे देशों के साथ।

1. जापान के साथ भारत ने सामरिक साझेदारी, अवसंरचना निवेश और इंडो—पैसिफिक रणनीति पर सहयोग बढ़ाया है।
2. दक्षिण कोरिया के साथ विज्ञान, प्रौद्योगिकी और रक्षा उत्पादन में सहयोग हुआ है।
3. ऑस्ट्रेलिया के साथ हिंद महासागर क्षेत्र में नौसैनिक सहयोग को गहराया गया है।

बहुपक्षीय मंचों पर भारत की उपस्थिति– भारत अब ASEAN Defence Ministers Meeting Plus (ADMM+), East Asia Summit (EAS), ASEAN–India Summit, और QUAD जैसे मंचों पर सक्रियता से भाग ले रहा है। यह केवल राजनीतिक भागीदारी नहीं, बल्कि क्षेत्रीय सुरक्षा और शक्ति–संतुलन में एक सक्रिय दावेदारी का संकेत है।

पूर्वोत्तर भारतः एक्ट ईस्ट का द्वार– पूर्वोत्तर भारत को एक्ट ईस्ट नीति के "Gateway" के रूप में देखा गया है। क्षेत्रीय संपर्क योजनाओं, सीमा व्यापार, पर्यटन और सांस्कृतिक संवाद के माध्यम से पूर्वोत्तर राज्यों को मुख्यधारा से जोड़ने का प्रयास किया जा रहा है। यह न केवल पूर्वी एशिया के साथ भारत के संबंधों को ज़मीनी आधार देता है, बल्कि क्षेत्रीय संतुलन और विकास का भी साधन बनता है।

चीन की पृष्ठभूमि में भारत की सक्रियता– चीन के आक्रामक विस्तार के मुकाबले भारत की एक्ट ईस्ट नीति संतुलनकारी शक्ति के रूप में उभर रही है। भारत ऐसी साझेदारियाँ बना रहा है जो स्वतंत्र और नियम–आधारित हिंद–प्रशांत क्षेत्र की संकल्पना को मज़बूती देती हैं।

इस प्रकार, एक्ट ईस्ट नीति भारत के लिए केवल कूटनीतिक रणनीति नहीं, बल्कि एक भविष्य–दृष्टिपूर्ण भूराजनीतिक उपस्थिति का आधार है, जो उसे पूर्वी एशिया की शक्ति संरचना में एक सशक्त और स्थिर भागीदार बनाती है।

भारत–जापान रणनीतिक सहयोग का विकास और आयाम– भारत और जापान के बीच रणनीतिक सहयोग 21वीं सदी की एशियाई राजनीति का एक महत्वपूर्ण स्तंभ बनकर उभरा है। दोनों देशों ने बीते दो दशकों में अपने संबंधों को पारंपरिक आर्थिक सहयोग से आगे बढ़ाकर रक्षा, अवसंरचना, विज्ञान–प्रौद्योगिकी, समुद्री सुरक्षा और वैश्विक शासन जैसे क्षेत्रों तक विस्तारित किया है। इन संबंधों का आधार लोकतांत्रिक मूल्यों, नियम–आधारित वैश्विक व्यवस्था, और मुक्त हिंद–प्रशांत क्षेत्र की साझा अवधारणा पर टिका हुआ है। चीन की शक्ति–वृद्धि और क्षेत्रीय प्रभुत्व की महत्वाकांक्षा के संदर्भ में भारत–जापान रणनीतिक सहयोग पूर्वी एशिया में शक्ति–संतुलन को बनाए रखने का एक सशक्त उपकरण बनता जा रहा है।

ऐतिहासिक पृष्ठभूमि और संबंधों का उत्कर्ष– भारत–जापान संबंधों की जड़ें ऐतिहासिक, सांस्कृतिक और बौद्धिक संवाद में निहित हैं, परंतु द्वितीय विश्व युद्ध के बाद यह संबंध शिथिल रहे। 21वीं सदी के आगमन के साथ–साथ इन संबंधों में तेज़ी आई। 2000 में 'ग्लोबल पार्टनरशिप' की स्थापना, 2006 में 'स्ट्रैटेजिक एंड ग्लोबल पार्टनरशिप', और 2014 के पश्चात 'स्पेशल स्ट्रैटेजिक एंड ग्लोबल पार्टनरशिप' में रूपांतरण – इन सभी चरणों ने द्विपक्षीय संबंधों को नई ऊँचाइयाँ प्रदान कीं। दोनों देशों के प्रधानमंत्रियों – शिंज़ो आबे और नरेंद्र मोदी – की व्यक्तिगत मित्रता और दृष्टिकोण ने भी इस सहयोग को गहराया।

रक्षा और सुरक्षा सहयोग

1. **संयुक्त सैन्य अभ्यासः** भारत–जापान द्विपक्षीय और बहुपक्षीय अभ्यासों में सक्रिय हैं, जिनमें प्रमुख है 'मालाबार नौसेना अभ्यास', जिसमें अमेरिका भी सम्मिलित है। यह हिंद–प्रशांत क्षेत्र में साझा समुद्री सुरक्षा हितों को मज़बूती देता है।

2. **लॉजिस्टिक्स समझौता (2015–2020):** दोनों देशों के बीच Reciprocal Provision of Supplies and Services Agreement हुआ, जिससे सेना–से–सेना सहयोग, समुद्री तैनाती और आपूर्ति श्रृंखला में सामंजस्य स्थापित हुआ।
3. **समुद्री डोमेन में सहयोगः** चीन की नौसैनिक सक्रियता के संदर्भ में, भारत और जापान ने समुद्री डोमेन अवेयरनेस (MDA), समुद्री मार्गों की सुरक्षा और समुद्री डकैती रोधी उपायों में समन्वय बढ़ाया है।

भारत–जापान सहयोग के प्रमुख क्षेत्र

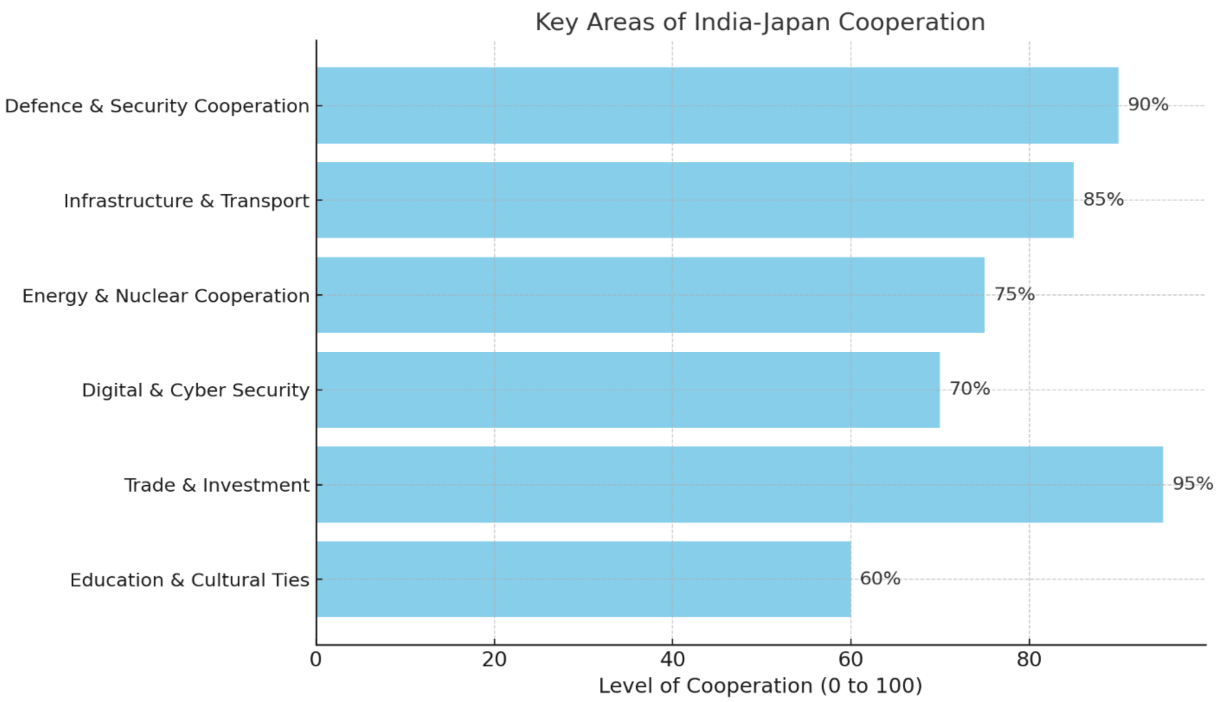

आर्थिक सहयोग और अधोसंरचना विकास

1. **बुलेट ट्रेन परियोजनाः** जापान की तकनीकी और वित्तीय सहायता से भारत में मुंबई–अहमदाबाद हाई स्पीड रेल प्रोजेक्ट (ॅपिदांदेमद) पर कार्य हो रहा है। यह परियोजना भारत–जापान सहयोग का प्रतीक बन चुकी है।
2. **Delhi-Mumbai Industrial Corridor (DMIC):** जापान इस औद्योगिक गलियारे का मुख्य साझेदार है। इससे भारत में विनिर्माण क्षेत्र को प्रोत्साहन मिला है।
3. **Act East के पूरक के रूप में** AAGC : Asia–Africa Growth Corridor (AAGC) भारत–जापान की एक संयुक्त पहल है, जो चीन की BRI रणनीति का वैकल्पिक विकास मॉडल प्रस्तुत करता है।

विज्ञान, प्रौद्योगिकी और निवेश सहयोग

1. **Digital और Cyber Security सहयोगः** भारत–जापान डिजिटल अर्थव्यवस्था, साइबर सुरक्षा, और आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के क्षेत्र में सहयोग कर रहे हैं।
2. **FDI और व्यापार:** जापान भारत में तीसरा सबसे बड़ा निवेशक है। Maruti–Suzuki, Hitachi, Honda, Panasonic जैसी कंपनियाँ भारत में सक्रिय हैं।
3. **ऊर्जा सहयोग:** परमाणु ऊर्जा के शांतिपूर्ण उपयोग हेतु 2016 में भारत–जापान के बीच असैन्य परमाणु समझौता हुआ – यह जापान द्वारा किसी गैर–NPT देश के साथ किया गया पहला समझौता था।

वैश्विक मंचों पर सहयोग– भारत और जापान संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद में सुधार, Indo–Pacific Oceans Initiative (IPOI), और फन¬k जैसे मंचों पर साझा दृष्टिकोण रखते हैं। दोनों देश एक मुक्त, समावेशी और नियम आधारित अंतरराष्ट्रीय व्यवस्था के लिए प्रतिबद्ध हैं।

विशेषताएँ और अंतर्निहित शक्तियाँ

- लोकतांत्रिक एकताः दोनों देशों की नीति संरचना लोकतांत्रिक मूल्यों और पारदर्शिता पर आधारित है।
- भूराजनीतिक समानताः दोनों चीन की विस्तारवादी नीतियों के प्रति सजग हैं और शक्ति–संतुलन की आवश्यकता को स्वीकारते हैं।
- सांस्कृतिक आदान–प्रदानः बौद्ध विरासत, भारतीय छात्रों के लिए जापानी छात्रवृत्तियाँ, और सांस्कृतिक महोत्सव इस संबंध को मानवीय आधार भी देते हैं।

इस प्रकार, भारत–जापान रणनीतिक सहयोग केवल एक द्विपक्षीय समझौता नहीं, बल्कि एक साझा दृष्टि का विस्तार है — जो पूर्वी एशिया और व्यापक इंडो–पैसिफिक क्षेत्र में संतुलन, सुरक्षा और सहयोग की स्थापना हेतु एक मजबूत आधार बन रहा है।

भारत–जापान साझेदारी और पूर्वी एशिया में शक्ति–संतुलन की पुनर्रचना – पूर्वी एशिया की भूराजनीतिक व्यवस्था आज उस संक्रमणकालीन दौर से गुजर रही है, जहाँ परंपरागत शक्ति–संरचना को नए साझेदार और गठबंधन चुनौती दे रहे हैं। इस क्रम में भारत–जापान रणनीतिक साझेदारी केवल द्विपक्षीय संबंध नहीं, बल्कि क्षेत्रीय शक्ति–संतुलन की पुनर्रचना का एक समन्वित प्रयास बन चुकी है। यह सहयोग चीन के वर्चस्ववादी दृष्टिकोण के विरुद्ध एक संतुलनकारी ध्रुव (balancing pole) के रूप में उभर रहा है। विशेषतः हिंद–प्रशांत की संकल्पना में दोनों देशों की साझा दृष्टि, क्षेत्रीय स्थिरता को पुनर्संयोजित करने का एक ठोस आधार बन रही है।

पूर्वी एशिया में शक्ति संतुलनः प्रमुख देश और उनकी शक्ति स्थिति

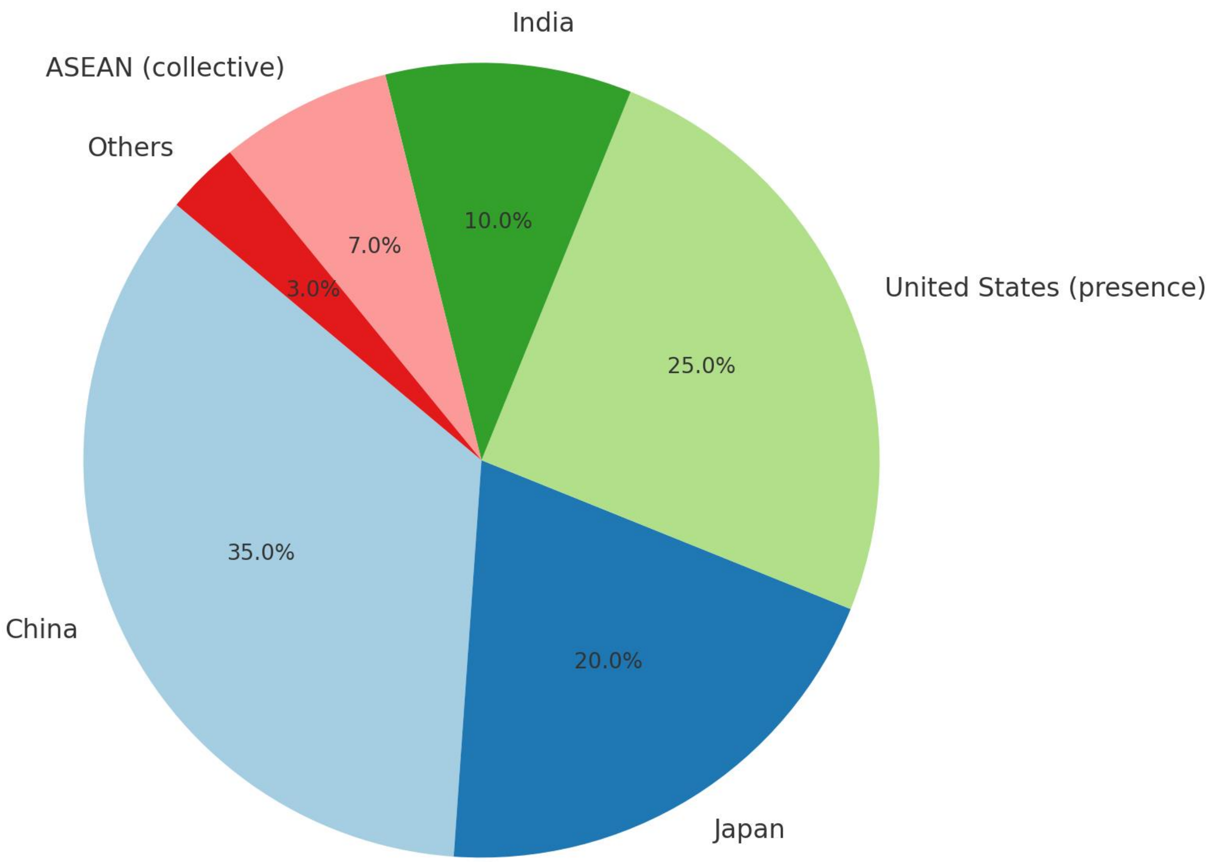

चीन की शक्ति–वृद्धि और क्षेत्रीय चुनौती– पिछले दो दशकों में चीन की आर्थिक, सैन्य और तकनीकी शक्ति में तीव्र वृद्धि हुई है। दक्षिण चीन सागर में उसकी आक्रामक नीति, ताइवान के प्रति सैन्य तैयारी, और ठत्‌ के माध्यम से एशिया, अफ्रीका और यूरोप में बुनियादी ढांचा परियोजनाओं ने एकतरफा प्रभाव उत्पन्न किया है। इस प्रक्रिया ने न केवल ASEAN देशों को दबाव में डाला है, बल्कि जापान, भारत और अमेरिका जैसे देशों के लिए सामरिक असंतुलन की चुनौती उत्पन्न की है।

चीन की इस बढ़ती सैन्य आक्रामकता और कूटनीतिक विस्तार के विरुद्ध, भारत और जापान की साझेदारी एक ऐसी रणनीति निर्मित करती है जो न तो संघर्ष पर आधारित है और न ही प्रभुत्व की आकांक्षा से प्रेरित, बल्कि सहयोग, विकास और पारस्परिक सम्मान के सिद्धांतों पर आधारित है।

इंडो–पैसिफिक में साझा दृष्टिकोण– भारत की Act East Policy और जापान की Free and Open Indo–Pacific Strategy (FOIP), दोनों ही एक साझा दृष्टिकोण को व्यक्त करते हैं, जिसमें मुक्त नौवहन, समुद्री कानूनों का सम्मान, और शांतिपूर्ण समाधान की प्राथमिकता शामिल है। इन रणनीतियों का प्रमुख उद्देश्य Hegemonic व्यवस्था को संतुलित करना और एक समावेशी बहुपक्षीयता को प्रोत्साहित करना है।

भारत और जापान दोनों इस विचारधारा को QUAD (Quadrilateral Security Dialogue) के माध्यम से भी आगे बढ़ा रहे हैं। QUAD अब एक ऐसा मंच बन चुका है, जहाँ रणनीतिक संवाद, समुद्री सहयोग, जलवायु परिवर्तन, तकनीकी मानक और आपदा प्रबंधन जैसे विषयों पर साझा रणनीति विकसित हो रही है।

क्षेत्रीय प्रतिक्रिया और ASEAN की भूमिका– भारत–जापान साझेदारी की सबसे बड़ी सफलता यह है कि यह किसी भी देश के प्रति आक्रामक नहीं है। यह साझेदारी ASEAN की केंद्रीयता (ASEAN Centrality) को मान्यता देती है और क्षेत्रीय सहयोग के लिए संवादात्मक कूटनीति को प्राथमिकता देती है। भारत और जापान, दोनों ही ASEAN देशों के साथ व्यापक आर्थिक और सुरक्षा संवाद में लगे हुए हैं, जो उन्हें चीन के विरुद्ध ध्रुवीकरण से दूर रखते हुए संतुलनकारी भूमिका प्रदान करता है।

इस संतुलन का प्रमुख उदाहरण है Asia-Africa Growth Corridor (AAGC), जो चीन के BRI का एक वैकल्पिक, अधिक पारदर्शी और लोकतांत्रिक स्वरूप है, जिसे भारत और जापान मिलकर आगे बढ़ा रहे हैं।

सामरिक और तकनीकी पुनर्संतुलन के संकेत– भारत–जापान सहयोग ने समुद्री सुरक्षा, अंतरिक्ष विज्ञान, साइबर रक्षा और आपूर्ति श्रृंखला सुरक्षा जैसे क्षेत्रों में भी गहरी घनिष्ठता स्थापित की है। यह केवल पारंपरिक सैन्य सहयोग नहीं है, बल्कि रणनीतिक स्वायत्तता और तकनीकी आत्मनिर्भरता की दिशा में स्मार्ट संतुलन स्थापित करने का प्रयास है।

चीन द्वारा नियंत्रित आपूर्ति शृंखलाओं से बाहर निकलने के लिए भारत–जापान ने Resilient Supply Chain Initiative (RSCI) की शुरुआत की है, जिससे एशिया–प्रशांत क्षेत्र में व्यापारिक निर्भरता को कम किया जा सके।

संयुक्त राष्ट्र और वैश्विक शासन में सहयोग– भारत और जापान दोनों संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद में सुधार के प्रबल समर्थक हैं और G4 समूह के सदस्य भी हैं। यह वैश्विक स्तर पर शक्ति–संरचना को वास्तविक वैश्विक प्रतिनिधित्व देने की दिशा में एक साझा प्रयास है। इस प्रकार, क्षेत्रीय शक्ति–संतुलन की पुनर्रचना से आगे बढ़ते हुए, दोनों देश वैश्विक शासन संरचना के लोकतांत्रिकरण में भी सक्रिय भूमिका निभा रहे हैं।

सीमाएँ और यथार्थ– हालाँकि भारत–जापान साझेदारी में सामरिक संभावनाएँ अत्यधिक हैं, परंतु यह भी सत्य है कि कुछ संरचनात्मक चुनौतियाँ भी विद्यमान हैं कृ जैसे भारत की निर्णय प्रक्रिया की धीमी गति, जापान की संवैधानिक सैन्य सीमाएँ, घरेलू राजनीतिक बदलाव, और ASEAN देशों की चीन के प्रति आर्थिक निर्भरता।

इसके बावजूद, यह साझेदारी पूर्वी एशिया में एक ऐसी शक्ति का निर्माण कर रही है जो न तो प्रभुत्व चाहती है और न ही टकराव, बल्कि एक स्थिर, नियम–आधारित और बहुध्रुवीय क्षेत्रीय व्यवस्था को स्थापित करना चाहती है। इस प्रकार, भारत और जापान की रणनीतिक साझेदारी न केवल उनके आपसी हितों की पूर्ति करती है, बल्कि पूर्वी एशिया में शक्ति–संतुलन की नई परिभाषा भी गढ़ती है — जो साझा मूल्यों, संवाद और सहयोग पर आधारित है।

अवसर और चुनौतियाँ– भारत–जापान रणनीतिक सहयोग के व्यापक विस्तार ने पूर्वी एशिया ही नहीं, समग्र इंडो–पैसिफिक क्षेत्र में शक्ति–संतुलन की एक नई संरचना की आधारशिला रखी है। किंतु किसी भी बहुपक्षीय या द्विपक्षीय सहयोग की भांति, इस साझेदारी में भी कई ऐसे अवसर हैं जिनका अधिकतम दोहन किया जा सकता है, वहीं कुछ चुनौतियाँ भी हैं जो इस प्रक्रिया को जटिल और धीमा बना सकती हैं।

अवसर – साझा मूल्य–आधारित नेतृत्वः भारत और जापान दोनों लोकतांत्रिक प्रणाली, कानून के शासन, मानवाधिकारों और पारदर्शी प्रशासन के पक्षधर हैं। यह साझा मूल्य आधार दोनों देशों को न केवल द्विपक्षीय सहयोग में, बल्कि वैश्विक मंचों पर भी नैतिक नेतृत्व प्रदान करता है।

1. **अवसंरचना और कनेक्टिविटी सहयोगः** भारत की पूर्वोत्तर क्षेत्र से लेकर दक्षिण–पूर्व एशिया तक की संपर्क परियोजनाओं में जापान की भूमिका निर्णायक है। AAGC (Asia-Africa Growth Corridor) और IMT ट्राईलेटरल हाईवे जैसी परियोजनाएँ क्षेत्रीय एकीकरण में सहायक हो सकती हैं।
2. **समुद्री सुरक्षा और हिंद–प्रशांत रणनीतिः** दोनों देश मुक्त नौवहन और अंतरराष्ट्रीय समुद्री कानूनों की रक्षा के पक्षधर हैं। इस संदर्भ में QUAD और मालाबार अभ्यास जैसे बहुपक्षीय मंचों पर उनकी सक्रियता क्षेत्रीय स्थिरता को मज़बूत करती है।
3. **प्रौद्योगिकी और डिजिटल सहयोगः** आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, साइबर सुरक्षा, ग्रीन टेक्नोलॉजी, और स्मार्ट इंफ्रास्ट्रक्चर जैसे क्षेत्रों में जापानी पूंजी और तकनीकी क्षमता तथा भारतीय बाजार एवं मानव संसाधन का सम्मिलन टेक्नो–सामरिक आत्मनिर्भरता की दिशा में अग्रसर हो सकता है।
4. **वैश्विक शासन में भागीदारीः** संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद में सुधार, WTO, IMF, और अन्य वैश्विक संस्थानों में लोकतांत्रिक प्रतिनिधित्व को लेकर भारत–जापान की साझी सोच समानधर्मी विश्व व्यवस्था की दिशा में सार्थक है।

चुनौतियाँ

1. **चीन की आक्रामक कूटनीतिः** चीन की सैन्य शक्ति, आर्थिक निवेश, और रणनीतिक दबाव ने ASEAN समेत कई पूर्वी एशियाई देशों को भूराजनीतिक असमंजस की स्थिति में डाला है। भारत–जापान साझेदारी को चीन घेराव के रूप में प्रस्तुत करता है, जिससे क्षेत्रीय विभाजन की आशंका बनी रहती है।
2. **जापान की संवैधानिक सीमाएँः** जापान की शांति–संविधान (Article 9) उसकी सैन्य भूमिका को सीमित करती है। यह भारत–जापान सामरिक साझेदारी में सीमित लचीलापन उत्पन्न करता है, विशेषतः सैन्य हस्तक्षेप और संयुक्त प्रतिक्रिया की स्थितियों में।
3. **भारत की नीतिगत जटिलताएँः** भारत में नीति क्रियान्वयन की धीमी प्रक्रिया, नौकरशाही अड़चनें, और बुनियादी ढांचे की चुनौतियाँ जापानी निवेशकों के लिए चिंता का विषय रही हैं।
4. **आंतरिक राजनीतिक परिवर्तनः** दोनों देशों में राजनीतिक नेतृत्व में आने वाले परिवर्तन कभी–कभी रणनीतिक निरंतरता में बाधा उत्पन्न कर सकते हैं। उदाहरणतः, शिंज़ो आबे के बाद जापानी विदेश नीति में कुछ हद तक अनिश्चितता देखी गई।

5. **ASEAN की भूमिका और सीमाएँ:** ASEAN देशों की चीन–निर्भरता, विशेषतः व्यापार और निवेश में, उन्हें भारत–जापान रणनीति से पूर्णतः एकीकृत होने से रोकती है।

QUAD भागीदारों की तुलना (रक्षा बजट, रणनीतिक आधार पर)

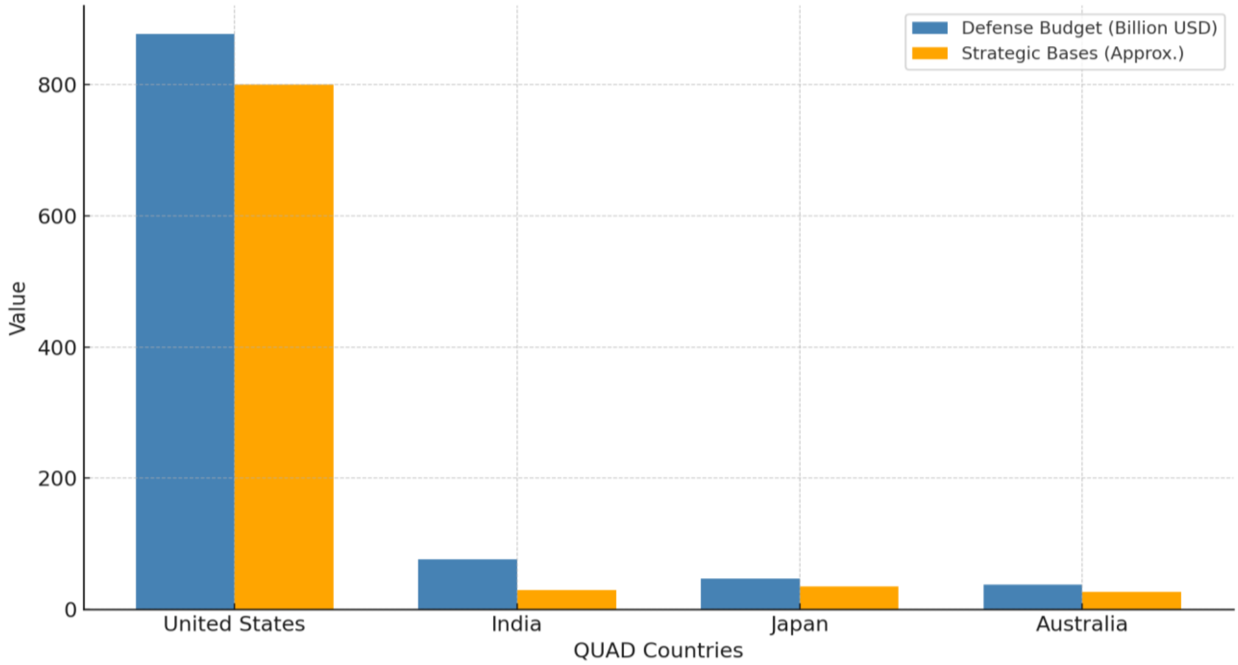

संतुलित दृष्टिकोण की आवश्यकता– भारत–जापान साझेदारी में जहां अत्यधिक संभावना है, वहीं स्थायित्व और प्रभावशीलता के लिए रणनीतिक संतुलन, दीर्घकालिक सोच, और लचीली कूटनीति की आवश्यकता है। यदि दोनों देश इन अवसरों का सतर्कता से लाभ उठाते हैं और चुनौतियों को दूर करने के लिए समन्वित नीति अपनाते हैं, तो यह साझेदारी भविष्य में पूर्वी एशिया के शक्ति–संतुलन को निर्णायक रूप से आकार देने में सक्षम होगी।

निष्कर्ष– भारत–जापान रणनीतिक सहयोग और भारत की एक्ट ईस्ट नीति, पूर्वी एशिया में शक्ति–संतुलन की दिशा में एक समन्वित, संवेदनशील और संतुलित प्रयास है। इस सहयोग की विशेषता यह है कि यह किसी के विरुद्ध नहीं, बल्कि साझा मूल्यों और विकासात्मक दृष्टिकोण पर आधारित है। जब चीन की शक्ति–वृद्धि और आक्रामक रणनीति से पूर्वी एशिया में असंतुलन की स्थिति निर्मित हो रही है, तब भारत और जापान जैसे लोकतांत्रिक देश मिलकर एक विकल्प आधारित संतुलन की संरचना कर रहे हैं।

भारत की एक्ट ईस्ट नीति ने देश को क्षेत्रीय शक्ति की सीमाओं से निकालकर भूराजनीतिक सक्रियता और जिम्मेदारी की ओर उन्मुख किया है। जापान, अपने तकनीकी कौशल, निवेश क्षमता और वैश्विक नेतृत्व दृष्टि के माध्यम से इस प्रक्रिया को दृढ़ता प्रदान करता है। दोनों देशों का सहयोग अब केवल द्विपक्षीय परियोजनाओं तक सीमित नहीं है, बल्कि इंडो–पैसिफिक की व्यापक भू–रणनीतिक सोच का हिस्सा बन चुका है।

हालाँकि, इस साझेदारी को सफल और प्रभावी बनाने के लिए बहुपक्षीय सहयोग, नीतिगत निरंतरता, पारदर्शिता और क्षेत्रीय संवाद की प्रतिबद्धता अत्यावश्यक है। चीन जैसी शक्ति की चुनौतियाँ, जापान की संवैधानिक बाधाएँ, भारत की आंतरिक संरचनात्मक जटिलताएँ कृ इन सभी को रणनीतिक धैर्य और चतुराई से संबोधित करने की आवश्यकता है।

अंततः, भारत–जापान रणनीतिक सहयोग पूर्वी एशिया में शक्ति–संतुलन के नए मॉडल को प्रस्तुत करता है कृ जो प्रतिस्पर्धा की बजाय समरसता, प्रभुत्व की बजाय साझेदारी, और अस्थिरता की बजाय संवहनीय विकास की ओर बढ़ता है। यही साझेदारी भविष्य में एक शांतिपूर्ण, स्वतंत्र और संतुलित पूर्वी एशिया की नींव बन सकती है।

सन्दर्भ

1. मिनिस्ट्री ऑफ एक्सटर्नल अफेयर्स, गवर्नमेंट ऑफ इंडिया, ऐक्ट ईस्ट पॉलिसी, www-mea-gov-in-act-east-policy-htm
2. मिनिस्ट्री ऑफ फॉरेन अफेयर्स ऑफ जापान, फ्री एंड ओपन इंडो–पैसिफिक, www-mofa-go-jp
3. पांडा, जगन्नाथ, इंडिया–जापान रिलेशन्सः डिकोडिंग द स्ट्रैटेजिक मैट्रिक्स, आईडीएसए मोनोग्राफ सीरीज़ नं. 22, 2016, पृ. 12–25
4. जैन, राजीव, जापान्स सिक्योरिटी पॉलिसी एंड द इंडो–पैसिफिक, ओआरएफ ओकेज़नल पेपर नं. 310, 2021, पृ. 4–16
5. मोहन, सी. राजा, मोदीज़ ईस्टवर्ड जर्नीः इंडिया एंड द इंडो–पैसिफिक, फॉरेन पॉलिसी, 2018, पृ. 9–15
6. स्मिथ, शीला ए., जापान रिआर्म्डः द पॉलिटिक्स ऑफ मिलिट्री पावर, हार्वर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, 2019, पृ. 47–73
7. बासु, रुमेल डहिया (संपा.), इंडियाज़ ऐक्ट ईस्ट पॉलिसीः रीजनल एंड ग्लोबल इम्प्लिकेशन्स, पेंटागन प्रेस, 2017, पृ. 101–118
8. मेडकाफ, रोरी, इंडो–पैसिफिक एम्पायरः चाइना, अमेरिका एंड द कॉन्टेस्ट फॉर द वल्ड्र्स पिवोटल रीजन, मैनचेस्टर यूनिवर्सिटी प्रेस, 2020, पृ. 88–105
9. ठाकुर, रमेश, द यूनाइटेड नेशंस, पीस एंड सिक्योरिटीः फ्रॉम कलेक्टिव सिक्योरिटी टू द रिस्पॉन्सिबिलिटी टू प्रोटेक्ट, कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस, 2016, पृ. 201–218
10. सिंह, स्वर्ण, चाइनाज़ बेल्ट एंड रोड इनिशिएटिव एंड इंडियाश्ज़ स्ट्रैटेजिक रिस्पॉन्स, केडब्ल्यू पब्लिशर्स, 2020, पृ. 65–83
11. बारू, संजय, इंडिया एंड द वर्ल्डः एस्सेज़ ऑन जियोइकोनॉमिक्स एंड फॉरेन पॉलिसी, हार्पर कॉलिन्स, 2016, पृ. 137–151
12. पंत, हर्ष वी., द चाइना चौलेंजः इंडियाज़ रिस्पॉन्स, हार्पर कॉलिन्स, 2019, पृ. 99–120

13. घोष, जगन्नाथ पी., इंडिया–जापान स्ट्रैटेजिक पार्टनरशिप इन द इंडो–पैसिफिक, इंडियन फॉरेन अफेयर्स जर्नल, खंड 14, अंक 1, 2019
14. राजगोपालन, राजेश्वरी पिल्लै, इंडियाज़ मेरीटाइम स्ट्रैटेजी एंड द इंडो–पैसिफिक, ऑब्ज़र्वर रिसर्च फाउंडेशन, 2021
15. जैन, भारती, इंडिया–जापान सिविल न्यूक्लियर कोऑपरेशन एग्रीमेंट, इकनॉमिक टाइम्स, 2016